श्री अभिनन्दननाथ चालीसा

ऋषभ-अजित-सम्भव अभिनन्दन,
दया करें सब पर दुखभंजन!
जनम-मरण के टूटें बन्धन,
मनमन्दिर तिष्ठं अभिनन्दन॥

अयोध्या नगरी अति सुन्दर,
करते राज्य भूपति संवर॥

सिद्धार्था उनकी महारानी,
सुन्दरता में थीं लासानी॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

रानी ने देखें शुभ सपने,
बरसे रतन महल के अंगने॥

मुख में देखा हस्ति समाता,
कहलाईं तीर्थंकर माता॥

जननी उदर प्रभु अवतारे,
स्वर्गों से आए सुर सारे॥

मात-पिता की पूजा करते,
गर्भ कल्याणक उत्सव करते॥

द्वादशी माघ शुक्ला की आई,
जन्मे अभिनन्दन जिनराई॥

देवों के भी आसन काँपे,
शिशु को लेकर गए मेरु पे॥

न्हवन किया शत-आठ कलश से।
'अभिनन्दन' कहा प्रेम भाव से॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

सूर्य समान प्रभु तेजस्वी,
हुए जगत में महायशस्वी॥

बोलें हित-मित वचन सुबोध,
वाणी में नहीं कहीं विरोध॥

यौवन से जब हुए विभूषित,
राज्यश्री को किया सुशोभित॥

साढ़े तीन सौ धनुष प्रमाण,
उन्नत प्रभु- तन शोभावान॥

परणाईं कन्याएँ अनेक,
लेकिन छोड़ा नहीं विवेक॥

नित प्रति नूतन भोग भोगते,
जल में भिन्न कमल सम रहते॥

इक दिन देखें मेघ अम्बर में,
मेघ - महल बनते पल भर में॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

हुए विलीन पवन चलने से,
उदासीन हो गए जगत से॥

राजपाट निज सुत को सौंपा,
मन में समता-वृक्ष को रोपा॥

गए उग्र नामक उद्यान,
दीक्षित हुए वहाँ गुणखान॥

शुक्ला द्वादशी थी माघ मास,
दो दिन का धारा उपवास॥

तीसरे दिन फिर किया विहार,
इन्द्रदत्त नृप ने दिया आहार॥

वर्ष अठारह किया घोर तप,
सहे शीत- वर्षा और आतप॥

एक दिन 'असन' वृक्ष के नीचे,
ध्यान वृष्टि से आतम सींचे॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

उदय हुआ केवल दिनकर का,
लोकालोक ज्ञान में झलका॥

हुई तब समोशरण की रचना,
खिरी प्रभु की दिव्य देशना॥

"जीवाजीव और धर्माधर्म,
आकाश-काल षद्रव्य मर्म॥

जीव द्रव्य ही सारभूत है,
स्वयंसिद्ध ही परमपूत है॥

रूप तीन लोक-समझाया,
ऊर्ध्व-मध्य-अधोलोक बताया॥

नीचे नरक बताए सात,
भुगतें पापी अपने पाप॥

ऊपर सोलह स्वर्ग सुजान,
चतुर्निकाय देव विमान॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

मध्य लोक में द्वीप असँख्य,
ढाई द्वीप में जायें भव्य॥

भटकों को तन्मार्ग दिखाया,
भव्यों को भव-पार लगाया॥

पहुँचे गढ़ सम्मेद अन्त में,
प्रतिमा योग धरा एकान्त में॥

शुक्लध्यान में लीन हुए तब,
कर्म प्रकृति क्षीण हुईं सब॥

वैसाख शुक्ला षष्ठी पुण्यवान,
प्रात: प्रभु का हुआ निर्वाण॥

मोक्ष कल्याणक करें सुर आकर,
'आनन्दकूट' पूजें हर्षाकर॥

चालीसा श्रीजिन अभिनन्दन,
दूर करें सबके भवक्रन्दन।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

स्वामी तुम हो पापनिकन्दन,
'अरुणा' करती शत-शत वन्दन॥

जाप:- ॐ ह्रीं अर्हं श्री अभिनन्दननाथाय नमः

हिन्दीपथ.कॉम

अन्य जैन चालीसा

आदिनाथ चालीसा

अजितनाथ चालीसा

संभवनाथ चालीसा

अभिनंदननाथ चालीसा

सुमतिनाथ चालीसा

पद्मप्रभु चालीसा

सुपार्श्वनाथ चालीसा

चंद्रप्रभु चालीसा

पुष्पदंत चालीसा

शीतलनाथ चालीसा

श्रेयांसनाथ चालीसा

वासुपूज्य चालीसा

विमलनाथ चालीसा

अनंतनाथ चालीसा

धर्मनाथ चालीसा

शांतिनाथ चालीसा

कुंथुनाथ चालीसा

अरहनाथ चालीसा

मल्लिनाथ चालीसा

मुनि सुव्रतनाथ चालीसा

नमिनाथ चालीसा

नेमिनाथ चालीसा

पार्श्वनाथ चालीसा

महावीर चालीसा